



0752CH17

मौत का पहाड़

शब्द : गायत्रीमदन दत्त
चित्र : राम वाईरकेव

इचिरो और चिरो दो भाई थे। दिन-भर वे अपने खेतों में काम करते थे।

शाम को जब वे घर लौटते, उनकी मां सुमी मुस्कुराते हुए उनका स्वागत करती थी।

आओ, मेरे बेटों, भोजन तैयार है।

पर कुछ दिनों से इचिरो और चिरो उदास रहने लगे थे...

और वे अक्सर खिड़की में से, दूर, कुहरे से घिरे पहाड़ की ओर देखा करते थे।

70 वर्ष के होते ही सब बूढ़ों को उनके बेटे इसी पहाड़ पर ला कर छोड़ जाया करते थे।

यह नियम उस राज्य के राजा ने बनाया था। इसके पीछे विचार यह था कि जब बूढ़ों में योग्यता और ताकत खत्म हो जाती है, वे परिवार और समाज पर बोझ बन जाते हैं।

इस नियम में यह बात भुला दी गयी थी कि बूढ़े लोग अपना वर्षों का अनुभव और ज्ञान अपने बच्चों को दे सकते हैं।

और एक शाम, सुमी ने अपने बेटों से कहा -

मेरे बच्चों, आज पूर्णमासी है। आज मैं 70 वर्ष की हो गयी। अब इस राज्य के नियम के अनुसार...

...कल तुम मुझे उस पहाड़ पर पहुँचा आओ, जहाँ से कोई लौट कर नहीं आता।



मेरे बच्चों,
कानून से तुम कैसे
लड़ोगे?



कोई धारा न था...



जैसे-जैसे वे ऊपर चढ़ते जा रहे थे, सुमी रास्ते के किनारे पर उगे हुए सरकड़ों को तोड़ कर गिराती जा रही थी.



वह खुद तो उस रास्ते पर वापस नहीं आनेवाली थी. पर अपने बेटों के लिए लौटने के रास्ते पर निशान छोड़ती जा रही थी.











जब राजा जी ने उत्सुकता से उस अनोखे ढोल की हाथ में उठाया, तो अंदरवाली मधुमक्खियाँ घबरा कर उड़ीं और चमड़े से टकराने लगीं, जिससे...





इंसिरो और चिरो,
आज मुझे बहुत बड़ी
सीख मिली है। मैं अपने
बनाये उस निर्दय नियम
को रद्द करता हूँ।



...क्योंकि अब किसी अभागे बेटे को अपने प्यारे मां-बाप को वहां छोड़ने नहीं आना पड़ता।